प्रसार शिक्षा विभाग

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय

(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)

जोबनेर-जयपुर (राज.) 303329

मुद्रक : अम्बा प्रिन्टर्स, जोबनेर मो. 9460191471

पंजीयन क्रमांक : SKNAU/2024/57

कृषकों के नवाचार का संकलन

मार्गदर्शन

डॉ. बलराज सिंह
कुलपति

डॉ. एम. आर. चौधरी
अधिष्ठाता

डॉ. आई.एम. खान
विभागाध्यक्ष

संकलन एवं संपादन

डॉ. बलवीर सिंह बधाला
सहायक आचार्य
(प्रसार शिक्षा)

डॉ. सन्तोष देवी सामोता
सहायक आचार्य
(प्रसार शिक्षा)

डॉ. जितेन्द्र सिंह
सहायक आचार्य
(पौध व्याधि)

डॉ. मनीषा शर्मा
सहायक आचार्य
(कीट विज्ञान)

डॉ. हिना सहीवाला
सहायक आचार्य
(पादप जैव प्रौद्योगिकी)

सन्दीप कुमार
शोध छात्र
(प्रसार शिक्षा)

प्रसार शिक्षा विभाग

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय

(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)

जोबनेर-जयपुर (राज.) 303329

पंजीयन क्रमांक : SKNAU/2024/57

कृषकों के नवाचार का संकलन

मार्गदर्शन

डॉ. बलराज सिंह
कुलपति

डॉ. एम. आर. चौधरी
अधिष्ठाता

डॉ. आई.एम. खान
विभागाध्यक्ष

संकलन एवं संपादन

डॉ. बलवीर सिंह बधाला
सहायक आचार्य
(प्रसार शिक्षा)

डॉ. सन्तोष देवी सामोता
सहायक आचार्य
(प्रसार शिक्षा)

डॉ. जितेन्द्र सिंह
सहायक आचार्य
(पौध व्याधि)

डॉ. मनीषा शर्मा
सहायक आचार्य
(कीट विज्ञान)

डॉ. हिना सहीवाला
सहायक आचार्य
(पादप जैव प्रौद्योगिकी)

सन्दीप कुमार
शोध छात्र
(प्रसार शिक्षा)

प्रसार शिक्षा विभाग
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय
(श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय)
जोबनेर-जयपुर (राज.) 303329

प्रो. बलराज सिंह
कुलपति

कुलपति सचिवालय
श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय
जोबनेर – 303329 (जयपुर) राजस्थान
फोन नं. 01425–254555,
ई–मेलः vc@sknau.ac.in

संदेश

राजस्थान एक कृषि प्रधान राज्य है, जहां की 60 प्रतिशत से अधिक आबादी कृषि एवं पशुपालन पर निर्भर है। राजस्थान के कुल सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 30 प्रतिशत भाग कृषि क्षेत्र से आता है। उन्नत कृषि तकनीकों के विकास, कृषि के ढांचागत विकास कार्यक्रम तथा किसानों की सजगता व सरकारी प्रोत्साहन से राजस्थान के कृषि उत्पादन में सतत् वृद्धि हुई है।

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर के मुख्यालय पर स्थित श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय जोबनेर व श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि व्यवसाय प्रबन्धन महाविद्यालय के कुल 120 छात्रों को कृषकों के खेत पर, कृषि विज्ञान केन्द्रों, कृषि उद्योगों व प्लांट क्लिनिक के अधीन प्रायोगिक कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ है।

स्टूडेन्ट रेडी (रूरल एन्टरप्रिन्योरशिप अवेयरनेस डवलपमेन्ट योजना) के छात्रों द्वारा प्रगतिशील कृषकों के यहां पशुपालन, समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, ग्रीनहाउस, पॉलीहाउस, नर्सरी प्रबन्ध, पादप कीट रोग प्रबंधन, बीजोपचार, खरपतवार नियंत्रण, फल–सब्जी एवं सफल उत्पादन का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया गया, जिसकी मैं सराहना करता हूँ।

डॉ. बलवीर सिंह बधाला, डॉ. संतोष देवी सामोता, डॉ. जितेन्द्र सिंह, डॉ. मनीषा शर्मा, डॉ. हिना सहीवाला एवं सन्दीप कुमार के द्वारा कठिन परिश्रम करके सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में **''कृषकों के नवाचारों का संकलन''** पुस्तिका तैयार की गई हैं, ये सभी बधाई के पात्र हैं। यह प्रकाशन राजस्थान के कृषकों, युवा उद्यमियों, शिक्षकों एवं छात्रों हेतु उपयोगी सिद्ध होगा, इसमें कोई संशय नहीं है। मैं इस प्रकाशन की सफलता की कामना करता हूँ।

(बलराज सिंह)

श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय
जोबनेर–303329 (जयपुर) राजस्थान

डॉ. एम. आर. चौधरी
अधिष्ठाता एवं संकाय अध्यक्ष

संदेश

राजस्थान की भौगोलिक परिस्थितियां विषमताओं और विविधिताओं से भरी पड़ी है, जहाँ एक ओर दक्षिणी–पूर्वी हिस्से में पूर्ण आर्द्र जलवायु पायी जाती है वहीं दूसरी ओर इसके उत्तर–पश्चिमी इलाकों में शुष्क जलवायु पायी जाती है। राजस्थान के कई हिस्सों में जहाँ एक ओर सर्दियों में तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है वहीं गर्मी में तापमान पचास डिग्री सेल्सियस तक पहुँच जाता है। विषम परिस्थितियों के बावजूद भी कृषक नए नवाचार अपनाते हुए सफलता प्राप्त कर अपनी आय को दुगुना करने में लगे हैं।

रेडी कार्यक्रम के छात्रों को प्रगतिशील एवं नवाचारी कृषकों के खेतों पर नई तकनीकी सीखने का शुभ अवसर मिला। इस कार्यक्रम के अर्न्तगत फसल उत्पादन, फल उत्पादन, पादप रोग व कीटों के प्रभावी नियंत्रण, मृदा की जांच, पौषक तत्वों, बीजोपचार, उर्वरक प्रबन्ध, खरपतवार नियंत्रण, जैविक खेती, समन्वित कृषि प्रणाली, कीटनाशक दवा का छिड़काव आदि का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया।
इस वर्ष 2023–2024 में रेडी कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय के 118 छात्र–छात्राएं व श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि व्यवसाय प्रबन्धन के 02 विद्यार्थियों को इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम से प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

रेडी के छात्र किसानों के खेत पर देखकर मुर्गीपालन, पशुपालन, समन्वित कृषि प्रणाली मॉडल, विभिन्न बगीचे, मशरूम खेती, मिल्क प्रोसेसिग व पैकिंग, वर्मीकम्पोस्ट, अजोला, एलोवेरा प्रोसेसिंग, नर्सरी प्रबन्धन, जैविक खेती, पंचगव्य निर्माण इत्यादि की प्रायोगिक जानकारी प्राप्त की।

मुझे बेहद प्रसन्नता है कि प्रसार शिक्षा विभाग के रेडी प्रभारी व सहायक प्रोफेसर डॉ. बलवीर सिंह बधाला, सहायक प्रोफेसर डॉ. संतोष देवी सामोता, सहायक प्रोफेसर डॉ. जितेन्द्र सिंह, सहायक प्रोफेसर डॉ. मनीषा शर्मा, सहायक प्रोफेसर डॉ. हिना सहीवाला तथा सन्दीप कुमार, शोध छात्र ने कठिन मेहनत कर सहज एवं सरल हिन्दी भाषा में **''कृषकों के नवाचारों का संकलन''** का तृतीय संस्करण संकलित किया है। यह प्रदेश के अन्य किसानों के लिये भी प्रेरणादायी होगा। मैं इसके प्रकाशन के लिए प्रसार शिक्षा विभाग के डॉ. बलवीर सिंह बधाला, डॉ. संतोष देवी सामोता व अन्य वैज्ञानिकों को हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

(एम. आर. चौधरी)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय सूची	पृष्ठ संख्या
1.	गेंदा फूल के स्टॅार्टअप से बना जोब प्रोवाईडर	1–2
2.	उन्नत तकनीक अपनाने से कृषक की आमदनी में वृद्धि	3–4
3.	नई उन्नत खेती से बढ़ी आमदनी	5–5
4.	संरक्षित खेती अपनाकर लोगों को दिया रोजगार	6–6
5.	गुलकन्द उत्पादन से धन्य और समृद्ध जीवन	7–7
6.	आधुनिक खेती के साथ उन्नत कृषि क्रियाएं कर कमाया दुगुना लाभ	8–8
7.	संरक्षित खेती के साथ पारम्परिक खेती	9–10
8.	नई तकनीकों और संरक्षित खेती अपनाकर कर रहे है अपने सपने पूरे	11–11
9.	जैविक अनार उत्पादन से लाभान्वित किसान	12–12
10.	संरक्षित खेती व पशुपालन से किसान बना खुशहाल	13–13
11.	पशुपालन से बने–उद्यमी	14–15
12.	संरक्षित खेती के साथ–साथ पशुपालन एवं पारम्परिक खेती कर कमाएं लाभ	16–16
13.	समन्वित खेती के साथ जैविक रसायनों का उपयोग कर किसान बना खुशहाल	17–17
14.	पुराना व्यवसाय छोड़ संरक्षित खेती व पशुपालन को अपनाया, आमदनी में लगे चार चांद	18–18
15.	संरक्षित खेती के साथ मशरूम की खेती	19–19
16.	परम्परागत कृषि को संरक्षित खेती में बदलकर कमा रहे दोगुना मुनाफा	20–20
17.	टमाटर एवं गेंदे के बीज उत्पादन के साथ पशुपालन से मुनाफा	21–21
18.	पॉलीहाऊस में खीरा लाभकारी उत्पादन	22–22
19.	हाईटेक खेती और पशुपालन खेती से किसान बना समृद्ध	23–23
20.	समन्वित खेती : आय दोगुना करने का आसान तरीका	24–24
21.	समन्वित खेती से जीवन खुशहाल	25–26
22.	समन्वित प्रणाली से उत्पादन कर मुनाफा कमाया	27–27
23.	अच्छी आमदनी के लिए खीरे की खेती हुई लाभकारी	28–28
24.	उन्नत तकनीकी अपनाकर लाभप्रद खेती	29–29
25.	जल संरक्षण एवं सौर ऊर्जा से कृषि एवं किसान की काया पलट	30–31

गेंदा फूल के स्टार्टअप से बना जॉब प्रोवाईडर

किसान का नाम	:-	श्री शंकर लाल ताकर
पिता का नाम	:-	श्री सीताराम ताकर
पता	:-	कालख, जोबनेर
मोबाइल नं.	:-	8290848014

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- सुनिता सेवदा

कृषि व्यवसाय प्रबंधन में स्नातकोत्तर करने के बाद नौकरी करता तो डिग्री का कोई महत्व नहीं रह जाता। इंटर्नशिप के दौरान तय कर लिया था की डिग्री कंप्लीट होने के साथ ही अपना व्यवसाय शुरू करूंगा, इसी सोच के साथ गेंदे के बीज तैयार करना शुरू किया। इसी का परिणाम निकला कि 1 बीघा क्षेत्र से ढाई लाख रुपये और 10000 वर्ग फीट क्षेत्र से 1 लाख रुपए की शुरुआती आमदनी मिलने लगी। जॉब प्रोवाइडर की सोच रखने वाले युवा किसान श्री शंकर लाल ताकर की इसी सोच ने उन्हें उन्नति की ओर अग्रसर किया।

शंकरलाल ने जयपुर जिले के कालख गाव में गेंदे के बीज की नर्सरी से अपना स्टार्टअप शुरू किया है। उनकी बीज उत्पादन की फर्म रजिस्टर्ड हो चुकी है तथा देश–प्रदेश में इनके बीज की मांग बढ़ रही है। अपने लक्ष्य की और बढ़ रहे शंकरलाल ताकर ने 3 साल पहले गेंदे के बीजों के उत्पादन में स्टार्टअप किया है और देखते ही देखते एक बीघा क्षेत्र से 2.5 लाख रुपये की कमाई शुरू हो गई है। किसान शंकर लाल ने पिछले साल ही श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर से कृषि व्यवसाय प्रबंधन में स्नातक की उपाधि प्राप्त की है।

इन्होंने बताया कि 1 बीघा क्षेत्र में गेंदे के बीज तैयार करता हूं। 1 बीघा से 50 किलो बीज तैयार हो जाता है। तैयार बीज को चौधरी एग्रो सीड्स के ब्रांड नाम से 10 ग्राम के पैकिंग में रुपये 900 की दर से ऑनलाइन कमर्शियल प्लेटफार्म के जरिए बिक्री कर रहे हैं। उन्हें कोलकाता और महाराष्ट्र से बीज की अच्छी मांग मिल रही है।

किसान शंकरलाल के पास 22 बीघा जमीन है। किसान का पुत्र होने के नाते खेती बाड़ी को बचपन से देखा और सीखा है। स्कूली शिक्षा के बाद कॉलेज में भी कृषि विज्ञान का अध्ययन किया। उन्होंने बताया कि इंटर्नशिप के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र फतेहपुर सीकर में उद्यानिकी विशेषज्ञ की देखरेख में प्रचलित फूलों का बीज उत्पादन करना सीख लिया और यही ज्ञान स्टार्टअप का जरिया बन गया।

हलधर टाइम्स | नवाचारी किसान | 8

शंकरलाल बना जॉब प्रोवाइडर, गेंदा फूल में शुरू किया स्टार्टअप

कृषि व्यवसाय प्रबंधन में स्नातक करने के बाद नौकरी करता तो डिग्री का कोई महत्व नहीं रह जाता। इंटर्नशिप के दौरान ही तय कर लिया था कि डिग्री कम्पलीट होने के साथ ही अपना व्यवसाय शुरू करूंगा। इसी सोच के साथ गेंदा फूल का बीज तैयार करना शुरू किया। इसी का परिणाम है कि बीघा भर क्षेत्र से ढ़ाई लाख रूपए और 100 गुणा 100 फुट आकार से लाख रूपए की शुरूआती आमदनी मिलने लगी है। जॉब प्रोवाइडर की सोच रखने वाले युवा किसान शंकरलाल ताकर की यही सोच है। शंकरलाल ने गेंदा फूल बीज और नर्सरी में अपना स्टार्टअप शुरू किया है।

90 हजार रूपए किलो बीज

नर्सरी भी लाभकारी

उन्नत पशुधन

किसान के पास सिंचाई के लिए ट्यूबवेल और फॉर्म पौण्ड है। कृषक परंपरागत फसलों में मूंगफली, बाजरा, मटर, जौ और गेहूं का उत्पादन लेता है। इन फसलों से सालाना 1 से 1.5 लाख रुपये की आमदनी मिल जाती है।

नर्सरी : किसान 10000 वर्ग फीट आकार में गेंदा की नर्सरी भी तैयार करते है जिससे सालाना 50–60 हजार गेंदे की पौध तैयार करते है। इससे सालाना 1 से 1.5 लाख रुपए की आमदनी मिलती है।

पशुधन

पशुधन में 2 गाय और 4 भैंसें जो देशी नस्ल की हैं। गाय का दूध रु. 35 और भैंस का दूध रु. 60 प्रति लीटर की दर से डेयरी में देता हूं। प्रतिदिन 14 लीटर दूध डेयरी में बेचते है एवं पशुओं के गोबर से वर्मी कंपोस्ट खाद तैयार करके नर्सरी के प्रयोग में ले रहे है।

फसल उत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2023–24

क्र.स.	फसल	क्षेत्रफल (है.)	कुल आय (रुपये)	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
1	बाजरा	1.0	50,000	8,000	42,000
2	मूंगफली	1.0	1,80,000	60,000	1,20,000
3	ग्वार	1.0	50,000	5,000	45,000
4.	गेंदा फूल	0.7	90,000	6,000	84,000
5.	टमाटर	0.8	55,000	10,000	45,000
	कुल योग		**4,25,000**	**89,000**	**3,36,000**

उन्नत तकनीक अपनाने से कृषक की आमदनी में वृद्धि

किसान का नाम :- श्री रमेश जी खोखर

पिता का नाम :- श्री घासी राम खोखर

पता :- गणेशपुरा, कालख, जोबनेर (जयपुर)

मोबाइल नं. :- 9784520540

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-पूजा सामोता, साक्षी कुमारी

यह कहानी कृषि की उन्नत तकनीकों की जानकारी से अपने निजी खेत पर फसलों की खेती संरक्षित करते हुए लाखों की आय अर्जित करने वाले रमेशजी खोखर की है। अपने खेत पर संरक्षित खेती करते हुए इन्होंने एक पॉलीहाऊस बनवाया तथा उसमे खीरे की फसल लगाईं परन्तु पानी की कमी के चलते ज्यादा आमदनी नहीं हुई। इन्होंने कृषि विभाग की सहायता से और जानकारी एकत्रित की और अपने खेत पर खेत तलाई (फॉर्म पौण्ड) बनाई। इनको पॉलीहाऊस और फॉर्म पौण्ड बनाने के लिए सरकार से अनुदान राशि भी प्राप्त हुई जिससे उनकी लागत बहुत कम हो गई। इसके फलस्वरूप आज उसकी आमदनी में भी काफ़ी इज़ाफ़ा हुआ है।

इन्होंने अपने खेत पर वर्ष 2021—22 में पॉलीहाऊस और फार्म पौण्ड बनाया तथा अपने मित्र से प्रोत्साहित होकर खीरा उत्पादन का कार्य शुरू किया। जिसमें बूंद—बूंद सिंचाई व्यवस्था करने से अधिक उत्पादन से अच्छा मुनाफा हुआ। वे अपने खेत पर बेड बनाकर मल्चिंग भी करते हैं। इसकी वजह से खरपतवार कम उगते हैं और मृदा में नमी का भी संरक्षण होता है तथा बूंद—बूंद सिंचाई की विधि द्वारा पानी की बचत होती है।

वर्तमान में पॉलीहाऊस में केवल खीरा फसल को (बूंद बूंद के द्वारा) खेत में मल्चिंग करके उगाते हैं।

ईकाई	क्षेत्र (बीघा)	वर्ष
पॉलीहाऊस	2	2018—19
फार्म पौण्ड	1.5	2019

'पॉलीहाउस में खीरा उत्पादन से औसत आय विवरण'

1. खीरा क्षेत्रफल : 4000 वर्गमीटर

2.उत्पादन (किलो) : 30,0000 प्रतिवर्ष पॉलीहाऊस में खाद, बीज, उर्वरक तथा मजदूरी पर कुल खर्चा 1,20,000 करके एक मौसम में कुल खीरा से आय 4.50 लाख प्राप्त कर शुद्ध वार्षिक आय 6 से 7 लाख कमाकर खुश हैं।

फसल उत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2023–24

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल है.	कुल आय (रुपये)	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
1	बाजरा	1.0	50000	8000	42000
2	मूंगफली	1.0	180000	60000	120000
3	ग्वार	1.0	100000	20000	80000
4.	खीरा (पॉली हाउस)	0.4 Sq.M^2	900000	240000	660000
	कुल योग				**920000**

''नई उन्नत खेती से बढ़ी आमदनी''

किसान का नाम :- श्री रामचंद यादव

पिता का नाम :- श्री लादूराम यादव

पता :- बस्सी झाझड़ा, जयपुर

मोबाइल नं. :- 9950444101

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- ज्योति खोखर, मनीषा कुमावत एवं नेहा कुमावत

यह कहानी बस्सी झाझड़ा गांव के प्रगतिशील किसान श्री रामचंद्र यादव की है। वर्तमान में नई कृषि उत्पादन की तकनीकों की सहायता से ये अत्यधिक मुनाफा कमा रहे हैं। इनके खेत में आवश्यकतानुसार श्रमिक कार्य करते हैं जो कि श्रमिकों के लिए एक अच्छा आय का साधन सिद्ध हुआ। इन्होंने कृषि विभाग एवं श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय से जानकारी प्राप्त कर अपने खेत पर पॉलीहाऊस एवं फार्म पौण्ड बनाया जिसके लिए सरकार की ओर से सब्सिडी का लाभ लिया।

इनके पास 10 बीघा जमीन है जिस पर 3 मुख्य रूप से इनके पास निम्न स्त्रोत हैं

इकाई	क्षेत्रफल (बीघा)	वर्ष
पॉली हाऊस	4	2018
फार्म पौण्ड	1.5	2018
सोलर प्लांट	0.5	2016

आय का विवरण

फसल का नाम	क्षेत्रफल (बीघा)	प्रति वर्ष (रू.)
खीरा (पॉलीहाऊस)	3	22 लाख
मिर्च	1	6 लाख
बाजरा	1	15000 रूपये

पशुपालन :–कृषक के पास कुल 5 पशु हैं जिनमें 2 गाय और 1 भैंस है और 2 बछड़ें है गायों में हॉलिस्टन नस्ल तथा भैंस की मुर्रा नस्ल हैं।

पशुपालन के आय विवरण

विवरण नस्ल	पशुधन संख्या	कुल आय (रू.)	कुल लागत (रू.)	कुल लाभ (रू.)
मुर्रा भैंस	2	56,000	32,000	24,000
होलस्टीन गाय	1	44,000	20,000	20,000
कुल	3	100,000	52,000	44,000

इनकी सालाना आय 29 लाख है और लागत 15 लाख आती है। (मजदूरी, खाद एवं उर्वरक, बीज व अन्य) और उत्पादन/आय सालाना बचत 14 लाख होती है। अपने खेत में बूंद–बूंद सिंचाई विधि का उपयोग करने से सब्जियों और अन्य फसलों में 20–40 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई है। इस प्रकार श्री रामचंद्र यादव लगातार कृषि क्षेत्र में चार चांद लगा रहे हैं।

संरक्षित खेती अपनाकर लोगों को दिया रोजगार

किसान का नाम :- **श्री मेवाराम महेरिया**

पिता का नाम :- **श्री नाथूराम महेरिया**

पता :- **बस्सी झाझड़ा, जयपुर**

मोबाइल नं. :- **9982276513**

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-निशा कुमावत

यह कहानी पूर्व संरपच श्री मेवाराम महेरिया की है जिन्होनें प्रोटेक्टेड खेती (संरक्षित खेती) से कम पानी और कम जगह में पॉलीहाऊस में खेती करके परम्परागत खेती से ज्यादा मुनाफा कमाया है। जब उन्हें पॉलीहाऊस से अधिक मुनाफा होने लगा तब श्री मेवाराम संरक्षित खेती की ओर बढ़ते गए और इन्होने 8 पॉलीहाऊस बना लिए। इनके पास 20 बीघा जमीन है जिसमें से 19 बीघा पर संरक्षित खेती करके 20 लोगों को रोजगार दिया हुआ है। इनके पास 4 फॉर्म पौण्ड है।

श्री मेवाराम के पास तीन भैंसे है जो देशी नस्ल की पशु है। तीनो भैंसे प्रतिदिन 30 लीटर दूध देती है जिससे उनको हर महीने 15000 का मुनाफा पशुपालन से होता है। पॉली हाउस में सिंचाई के लिए इन्होंने ड्रिप इरिगेशन (बूंद–बूंद सिंचाई) सिंचाई सिस्टम अपना रखा है। इन्होंने 7 पॉलीहाऊस में खीरा और 1 में शिमला मिर्च लाल, पीले रंग की उगाई थी। श्री मेवाराम को 1 पॉलीहाऊस से 1 साल में 18 लाख रूपये का मुनाफा हो जाता है। इस प्रकार 8 पॉलीहाऊस से 1 करोड 44 लाख रूपये तक मुनाफा सालाना हो जाता है। ये अपने पॉलीहाऊस में पशुओं से प्राप्त खाद का ही उपयोग करते है। इनके पॉलीहाऊस में विभिन्न बीज कम्पनियाँ अपने बीजों की ट्रॉयल लगाती है जिससे अलग से आमदनी होती है। श्री मेवाराम बाहर से आए लोगों को संरक्षित खेती के लिए जागरूक करते हैं। इस प्रकार श्री मेवाराम महेरीया आज संरक्षित खेती अपनाकर बहुत खुश हैं व अच्छी आमदनी प्राप्त करते हैं।

इकाई	वर्ष	क्षेत्र (वर्गमीटर)	आय (लाभ)
पॉलीहाऊस	2013–14	4000	5 लाख
पॉलीहाऊस	2023–24	32000	90 लाख

''गुलकन्द उत्पादन से धन्य और समृद्ध जीवन

किसान का नाम :- **श्री गोपाल डांगी**
पिता का नाम :- **श्री राधाकृष्ण डांगी**
पता :- **ग्राम पोस्ट-देवनगर, तहसील-पुष्कर, जिला-अजमेर**
मोबाइल नं. :- **7742529414**
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-निश्चय आसीजा

यह पुष्कर तहसील के देवनगर गांव के प्रगतिशील किसान गोपाल डांगी की सफलता की कहानी है जो अपने नवचारों से अन्य किसानों के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन रहे हैं। उनके पास कुल 4 बीघा जमीन है जिसमें वे मौसम के अनुरूप गुलाब, मिर्च, जामुन, मूली, बाजरा, प्याज एवं गेंदा आदि अपने खेतों में उगाते है। उनके खेत में 2 ट्यूबवेल्स हैं और वे ड्रिप सिंचाई का अधिक उपयोग करते हैं जो कि सरकार द्वारा दी गई सब्सिडी की मदद से लगाया गया है। इसका उपयोग सब्जी एवं फसलोत्पादन में किया जा रहा है, जिससे कम लागत व कम पानी में वे अधिक मुनाफा कमा रहे हैं। समय–समय पर कृषि पर्यवेक्षक व कृषि विज्ञान केंद्र, अजमेर की सलाह लेते हुए तथा विभिन्न स्थानों पर होने वाली बैठकों मे भाग लेकर नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर उसका कृषि में प्रयोग करते रहते हैं।

श्री गोपाल डांगी की मुख्य सफलता है गुलाब की खेती जिससे पिछले साल तक, उन्होंने 2.5 बीघा जमीन में गुलाब उगाया और इसे स्थानीय FPO "पुष्कर वाला" को बेचा, जो गुलकंद बनाता है और बड़ा लाभ कमाता है। "पुष्कर वाला" इनके गुलाब लगभग 50 रु. प्रति किलो में या सर्दियों में 60 रु. प्रति किलो तक खरीदता है एवम् गुलकंद बना कर बेचता है। किसान के लगभग सालाना 1 से 1.5 लाख रु. शुद्ध आय होती है। उनके गुलाब के उत्तम कार्य को देखते हुए हाल ही में उन्हें 'श्रेष्ठ गुलाब नर्सरी' के नाम से नवाजा गया है। अब श्री गोपाल डांगी ने अपने घर पर गुलकंद बनाने के लिए एक अलग हिस्से के निर्माण करने के लिए निर्णय लिया है। अब वे गुलाब को सामान्य मूल्य पर न बेच कर उसकी प्रोसेसिंग करने के बाद अधिक मुनाफा कमाने की ओर अग्रसर होना चाहते है। इन्होंने इसकी शुरुआत के लिए अपने घर के बाहर अलग से 60×60 का हिस्सा बनवाना शुरू किया है। इनकी यह पहल इनकी गुलाब से हो रही आय में 2–3 गुना वृद्धि कर देगी। इनके अनुसार गुलाब की खेती ने उन्हे अधिक आय और सफलता दी है और अब वे उसे और ऊंचाई पर ले जाना चाहते हैं।

पशुपालन :– उनके पास कुल 5 पशु हैं जिनमें 1 गाय और 2 भैंस तथा 2 बकरियाँ हैं। गाय में होलस्टीन नस्ल है तथा भैंस की मुर्रा नस्ल है। इनसे उन्हें एक महीने में लगभग 20 से 22 हजार रुपये की आय मिलती है। ये पशुओं को समय पर भरपूर मात्रा में हरा चारा तथा पौष्टिक आहार खिलाते हैं।

अपने गुलकंद उत्पादन की शुरुआत के विचार से उनके जीवन में कितना बड़ा बदलाव आयेगा इसका अंदाजा डांगी जी को है। पशुपालन तो उनका अच्छा है ही और अब गुलकंद भी उनकी आय दुगनी करने में मदद करेगा। अब वे अपने पोतों को अच्छे स्कूलों में उच्च शिक्षा के लिए भेज सकेंगे और उनका परिवार अधिक समृद्ध जीवन जी सकेगा। इनका कहना है कि तकनीकी मार्गदर्शन से मेरी आर्थिक स्थिति में सुधार आया और मैं आगे और तरक्की के लिए निरंतर नवीन प्रयास करता रहता हूं। ग्राम पंचायत देवनगर में प्रोग्रेसिव फार्मर में से पहला स्थान इनका ही है जिससे इनको क्षेत्र में भी सामाजिक पहचान मिली हैं।

आधुनिक खेती के साथ उन्नत कृषि क्रियाएं कर कमाया दुगुना लाभ

किसान का नाम :- **रामदेव भंवरिया**
पिता का नाम :- **श्री खींवाराम भांवरिया**
पता :- **कालख, जोबनेर**
मोबाइल नं. :- **9799425296**

राजस्थान जयपुर जिले के छोटे से गांव में रहने वाले किसान श्री रामदेव भंवरिया ने आधुनिक खेती एवम् उन्नत कृषि क्रियाएं अपनाकर अपने द्वारा की गई खेती से दुगुना लाभ उठाया। जल उपलब्धता में कमी आदि के चलते श्री रामदेव ने मुख्यमंत्री कृषक साथी योजना के तहत सरकार द्वारा सब्सिडी मिलने पर 2 फार्म पौण्ड बनवाए तथा संरक्षित खेती के लिए राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत सरकार द्वारा सब्सिडी मिलने पर 1000 वर्गमीटर के 2 पॉलीहाऊस बनवाएं।

पॉलीहाऊस में खीरे की फसल उगाकर वर्ष 2022–23 में 6 लाख रूपये का लाभ कमाया। इसी के साथ टमाटर की विभिन्न प्रकार की किस्मों की पौध तैयार करके भी अपनी आय में लगातार इजाफा कर रहे हैं। कृषि के साथ–साथ पशुपालन से भी अच्छा लाभ कमा रहे हैं। कालख़ गांव के अधिकतर किसान समन्वित खेती को अपनाकर परंपरागत खेती को नई जीवंतता की ओर लेकर जा रहे है। इसी के साथ श्री रामदेव ने ईसबगोल एवम् कपास की खेती लगभग 2 हैक्टेयर में कर रहे है इससे भी इनकी आय में वृद्धि होगी अपितु इस क्षेत्र के किसानों को ईसबगोल की उन्नत कृषि की ओर दिशा मिल रही हैं।

गाय एवम् भैंस से महीने में लगभग 400 लीटर दूध की उपलब्धता होती है जिससे महीने में 20 हजार तक आय प्राप्त की जा रही है। किसान के अनुसार मिश्रित खेती करने से फसल उपलब्धता के साथ–साथ गोबर की खाद एवम् दूध की प्राप्ति पशुपालन से की जा सकती है।

फसल उत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2023–24

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल (है.)	उत्पादन क्वि.		कुल आय (रुपये)	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
			दाना	चारा			
1	बाजरा	1.0	20	35	50000	8000	42000
2	मूंगफली	1.0	32	30	180000	60000	120000
3	ग्वार	1.0	10	10	50000	5000	45000
4.	कपास	1.0		–	75000	20000	55000
5.	गेहूँ	1.0	40	60	120000	20000	100000
6.	जौ	1.0	30	40	80000	20000	60000
	कुल योग	**6.0**	**132.0**	**175.0**	**555000**	**133000**	**422000**

संरक्षित खेती के साथ पारम्परिक खेती

किसान का नाम :- **लादूराम निठारवाल**
पिता का नाम :- **श्री कानाराम निठारवाल**
पता :- **बस्सी झाझड़ा**
मोबाइल नं. :- **9828770096**
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-रितिका दाधीच

मिनी इजराइल नाम से प्रसिद्ध जयपुर जिले के गांव बस्सी झाझडा निवासी कृषक श्री लादूराम निठारवाल एवं उनके पुत्र श्री बाबूलाल निठारवाल ने कृषि की आधुनिक उन्नत तकनीकी से पॉलीहाऊस मे सब्जियां उगाकर मुनाफा कमाया।

सरकारी सब्सिडी से लगाए पहले पॉलीहाऊस :–

सर्वप्रथम 2019–20 में इन्होंने 4000 वर्ग मीटर में एक पॉलीहाऊस लगाया जिसकी लागत 18 लाख रूपये लगी है। जिस पर सरकार द्वारा दी गई 75 प्रतिशत सब्सिडी का लाभ उठाया गया। इसके बाद खीरे की फसल से संरक्षित कृषि से हुए लाभ को देखते हुए इन्होंने एक अन्य 2000 वर्ग मीटर का एक पॉलीहाऊस बनाया एवं उस पर मुनाफा कमाया।

इन पॉलीहाऊस से औसतन 1300 से 1400 पॉलीबैग (22 किलोग्राम प्रति पॉलीबैग) प्रति माह उत्पादन लिया जाता है तथा उनकी सालाना कुल बचत या आय 3.5–4 लाख है ।

ईकाई	क्षैत्रफल	आय (प्रतिवर्ष)
पॉलीहाउस(खीरा)	6000 वर्गमीटर	400000

संरक्षित कृषि के साथ–साथ श्री बाबूलाल निठारवाल पशुपालन एवं पारंपरिक कृषि को भी सुचारू रूप से कर रहे हैं। इनके पास 3 मुर्रा भैंस एवं 1 गाय है जिससे प्रतिवर्ष 1 लाख रुपये का मुनाफा कमा रहे हैं। पशुपालन से प्राप्त दुग्ध को डेयरी में बेचते है। वे खाद को यह पारंपरिक कृषि में फसलों के लिये में उपयोग

कृषि कार्यों में उपयोग होने वाली बिजली सोलर पैनल द्वारा उपयोग में ली जाती है जो जिसकी क्षमता 7 किलोवाट है। इनके द्वारा सिंचाई हेतु फार्म पौण्ड में संरक्षित वर्षा जल का उपयोग किया जाता है तथा यह बूंद बूंद सिंचाई पद्धति को भी अपनाए हुए हैं।

वर्तमान में कृषि की उन्नत कृषि तकनीकी को देखते हुए इन्होंने अक्टूबर 2023 में अपने पुराने पॉलीहाऊस को बढ़ाकर 4000 वर्ग मीटर के क्षैत्रफल पर 95 प्रतिशत सब्सिडी पर लगाया है। जिसकी कुल लागत 10,17,200 रुपये है। इनकी संरक्षित एवं पारंपरिक कृषि को मिलाकर उनकी प्रतिवर्ष आय 7.5 लाख रुपये है। इसके साथ ही यह कुछ सब्जियां जैसे ककड़ी, टमाटर वह अन्य का भी उत्पादन करते हैं।

फसल	क्षेत्रफल	प्रतिवर्ष आय
खरीफ		
बाजरा	1 हैक्टेयर	100000
मूंगफली	2 हैक्टेयर	
रबी		
मटर, जौ	2 बीघा	150000
सरसों	2 बीघा	
प्याज	3 बीघा	

नई तकनीकों और संरक्षित खेती अपनाकर कर रहे है अपने सपने पूरे

किसान का नाम :- रामस्वरूप यादव
पिता का नाम :- घासीराम यादव
पता :- आईदान का बास, खेड़ी अलूफा, जयपुर
मोबाइल नं. :- 8949211310
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-प्रियंका कुमावत

राजस्थान में जयपुर जिले के गांव आईदान का बास में रहने वाले रामस्वरूप यादव की कहानी एक प्रेरणादायक उदाहरण है। वे एक प्रगतिशील किसान हैं जिन्होंने नई तकनीकों को अपनाकर खेती को एक सफल व्यवसाय बना दिया है। श्री रामस्वरूप के पास 8 बीघा जमीन है। उन्होंने इस जमीन का समुचित उपयोग करते हुए 3000 वर्ग मीटर का एक पॉलीहाऊस बनाया है जिसमें वे खीरे की खेती करते है। उन्होंने बूंद बूंद सिंचाई तकनीक का उपयोग करके सिंचाई की व्यवस्था की है। इसके अलावा उन्होनें सोलर पैनल का उपयोग करके सिंचाई के लिए ऊर्जा प्रदान की है।

वर्तमान में, इनकें पास 2 पॉलीहाऊस व 1 फार्म पौंड भी बना हुआ है। इस प्रकार वे अपनी आय को और बढ़ाने का प्रयास कर रहे है।

श्री रामस्वरूप पशुपालन में भी सक्रिय है। उनके पास 3 गाय और 4 भैंस है, इनसे प्रतिदिन 25 से 35 लीटर दूध उत्पादन होता है। इसके साथ ही खरीफ फसलें जैसे बाजरा, ग्वार एवं मूंगफली इत्यादि की उन्नत किस्में उगाकर अच्छी पैदावार के साथ आमदनी बढाते है। इनकी कहानी हमें यह सिखाती है कि कृषि में नवाचार और समर्पण से किसान अपनी आय में वृद्धि कर सकते हैं।

इकाई	क्षेत्र (वर्गमीटर)	वर्ष
पॉलीहाऊस	3000 वर्गमीटर	2019–20
पॉलीहाऊस	2000 वर्गमीटर	2022–23
फार्म पौण्ड (खेत तलाई)	1000 वर्गमीटर	2019–20

जैविक अनार उत्पादन से लाभान्वित किसान

किसान का नाम :- रामसिंह शेखावत
पिता का नाम : श्री हरि सिंह शेखावत
पता :- ढोढसर, गोविन्दगढ़, जयपुर
मोबाइल नं. :- 9829866919
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- प्रियंका कुमावत

गोविंदगढ़, जयपुर की ग्राम पंचायत ढोढसर के प्रगतिशील किसान रामसिंह शेखावत ने नेशनल इंजीनियरिंग इंडस्ट्रीज रिपेयरिंग कंपनी से रिटायर होकर अपने गांव में कृषि क्षेत्र में कुछ नया करने की सोची। कृषि अधिकारियों से अनार का बगीचा लगाने की ऑनलाइन जानकारी प्राप्त की और 2017 में 2 बीघा खेत पर अनार का बगीचा तैयार किया जिसमें लगभग 550 पौधे लगाए हैं। ये पौधे महाराष्ट्र के जलगांव से सिंदूरी भगवा (टिश्यु कल्वर) किस्म के मंगवाएं। फल बहुत आकर्षक, केसरिया रंग, चिकने और चमकदार छिलके वाले होते है जो इस के कॉस्मेटिक मूल्य और फलों के बाजार स्वरूप को बढ़ा देते है। मोटे छिलके के कारण फल लम्बी दूरी के परिवहन के लिए उपयुक्त होते हैं। अन्य फलों की तुलना में फलों के फटने की घटना कम होती है। इन पौधों को कतार में लगाया जिसमें पौधे से पौधे की दूरी 8 फीट तथा कतार के बीच की दूरी 12 फीट रखी। प्रतिवर्ष अब एक पेड़ की उपज 30 किलो है। कीटनाशक एवं रसायन का उपयोग नहीं करने से अनार के फल रसीले एवं स्वाद में मीठे होते हैं, इसलिए इनके अनार के फलों की मांग मंडी में बनी रहती है। ये जैविक खेती से तैयार अनार को स्थानीय मंडी के अलावा चौमूँ व जयपुर की मुहाना मंडी में आपूर्ति करते हैं। जैविक अनार उत्पादन करने के कारण किसान लगभग 15 लाख रुपये प्रतिवर्ष कमा रहा है।

'उत्पादन बढ़ाने के लिए उपाय'

मधुमक्खियां अनार में परागण करती है जिससे उत्पादन डेढ़ गुना बढ़ जाता है। अनार के फूलों में खुशबू नहीं होती है जिससे मधुमक्खी बगीचे की ओर नहीं जाती। पुष्पन के समय मधुमक्खीयों को बगीचे की ओर आकर्षित करने के लिए इन्होंने देशी तरीके से कम लागत में बगीचे में गुड़ के पानी से भरे मटके रखकर उसमें से कपड़े की छोटी–छोटी बत्ती बनाकर मटके के मुंह से बाहर निकाल देते हैं तथा इन मटकों को बगीचे के चारों कोनों पर रख देते हैं। मीठे की खुशबू से बगीचे की ओर मधुमक्खी आने लगती है। मधुमक्खियों की संख्या बढ़ाने के लिए यह अनार के पेड़ों पर 200 लीटर पानी, 1 किलो गुड़, 3 किलो खट्टी छाछ , 100 ग्राम दालचीनी का घोल बनाकर स्प्रे करते है। समान आकार के फल मिलते है जिससे मंडी में रेट अच्छी मिलती है।

'निमेटोड नियंत्रण के उपाय'

बगीचे में निमेटोड को रोकने के लिए बगीचे में गेंदे की फसल की बुवाई भी करते हैं जिससे निमेटोड का नियंत्रण हो जाता है और अतिरिक्त आमदनी प्राप्त होती हैं। 'सिंचाई' इनलाइन ड्रिप विधि से बगीचे में सिंचाई देते हैं और जैविक उर्वरक सिंचाई के साथ ही देते हैं तथा रसायनिक उर्वरकों के स्थान पर गाय के गोबर से निर्मित खाद एवं प्राकृतिक रूप में उपलब्ध वस्तुओं का उपयोग कर जैविक खाद व कीटनाशक तैयार कर रहे हैं। जिवामृत , धनजिवामृत, नाडेप खाद, गोप्पा अमृतम, दशपर्णी कीटनाशी, सुपरकम्पोस्ट खाद और वर्मी कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करते हैं।

'फलों की ग्रेडिंग' पेड़ों पर ही कर लेते हैं जिससे अधिक भार से टहनियां नहीं टूटती। अनार के फलों को पक्षियों व अनार की तितली से बचाने के लिए पूरे बगीचे को जाल से ढ़क रखा है।

श्री रामसिंह शेखावत जी को अनार की खेती मे नवचारों के लिए वर्ष 2021 में कृषि विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा सम्मानित किया जा चुके है।

संरक्षित खेती व पशुपालन से किसान बना खुशहाल

किसान का नाम :- श्री तेजा राम जाट

पिता का नाम :- श्री लादूराम जाट

पता :- खेड़ी अलूफा, जयपुर

मोबाइल नं. :- 9983831516

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- मनीषा ताखर

संरक्षित खेती आधुनिक तकनीक की वह संरचना है जिसमें एक नियंत्रित वातावरण में फ

। इसी पर आधारित यह कहानी जयपुर जिले के एक छोटे से गाँव खेड़ी अलूफा में रहने वाले प्रगतिशील किसान श्री तेजाराम जाट की है। वे 2016 से संरक्षित खेती व पशुपालन को अपनाकर सालाना लाखों की आमदनी प्राप्त कर रहे है।

इनके पास 4000 वर्गमीटर व 2000 वर्ग मीटर के दो पॉलीहाऊस हैं। इसमें वे खीरा, टमाटर आदि लगाकर बाजार में अच्छे दामों पर बेचते है, साथ ही इनके एक सोलर बोरिंग (5 एचपी) भी है जिससे सिंचाई के लिए प्रयोग किया जाता है।

पॉलीहाऊस से प्राप्त आय का विवरण वर्ष 2022–23

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल	उत्पादन	कुल आय (रू.)	कुल व्यय (रू.)	शुद्ध आय (रू.)
1.	खीरा	0.6 हैक्टेयर	25 टन/हैक्टेयर	20 लाख	9 लाख	11 लाख

पशुपालन : इनके पास कुल 15 पशु है जिसमे 6 गायें, 4 बछडी व 5 भैंस है। गायों की हॉलिस्टीन, गिर, साहीवाल तथा भैंस की मुर्रा नस्ल है। किसान प्रतिदिन 40–45 लीटर दूध डेयरी में देते है जिससे उनको अच्छी आय प्राप्त होती है।

बूँद–बूँद सिंचाई–किसान ने अपने पूरे फार्म क्षेत्र पर बूँद–बूँद सिंचाई प्रणाली लगा रखी है। इसके लिए किसान फार्म पौण्ड के जल का ही उपयोग करते है जिसमें वर्षा जल को एकत्रित किया जाता है।

खेती के साथ पशुपालन बना मुनाफे का साधन :-

किसान अपने फार्म पर दोनों मौसम की फसल लेता है, जिसमें उसे अपने परिवार के पोषण के साथ–साथ पशुओं के लिये चारा भी मिलता है व साथ ही घरेलु उपयोग के अलावा अपनी फसल को बाजार में बेचकर आर्थिक मुनाफा भी होता है। इस प्रकार श्री तेजाराम जी जाट को संरक्षित खेती व पशुपालन से लगभग13 –14 लाख की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त हो रही है।

पशुपालन से बने – उद्यमी

किसान का नाम	:-	श्री रणजीत मण्डीवाल
पिता का नाम	:-	श्री जीवण राम मण्डीवाल
पता	:-	डेहरा, जोबनेर, तहसील-जोबनेर, जिला-जयपुर
मोबाईल नं.	:-	9667714848
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-राखी शर्मा		

- यह जिले के छोटे से गांव डेहरा के पशुपालक रणजीत मण्डीवाल की कहानी हैं। इनके पास 16 बीघा जमीन है जिसमें वे गेहूँ, जौ, बाजरा, मूंग, ग्वार एवं रिंजका की फसल लेते हैं।
- जमीन कम होने के कारण वे प्रति वर्ष ज्यादा मुनाफा नहीं कमा पाते थे तो इन्होंने खेती के साथ पशुपालन शुरू किया जो अधिक लाभदायक साबित हुआ। इनके यहाँ पशुओं से प्राप्त गोबर से खाद तैयार किया जाता है जिसका उपयोग खेती में अच्छी पैदावार के लिए किया जाता है। साथ ही इन्होंने 2008 में मुर्गीपालन व्यवसाय भी शुरू किया था। वर्तमान में इनके पास 2000 चूजे है। ये मुर्गियां ब्रॉयलर मांस वाली है। शुरूआती अवस्था में मुर्गियों का वजन 40 ग्राम प्रति मुर्गी होता है जिनको किसान 40 दिन तक अपने फॉर्म पर देखरेख में रखते है और जब उनका वजन लगभग 2 किलोग्राम प्रति मुर्गी हो जाता है तब उनको बेच देते है।
- चूजों के लिए 100 गुना 27 फीट आकार का वैज्ञानिक तरीके से आवास बनाया हुआ है। इन्होंने बताया कि इस मुर्गीपालन को बढ़ाने के लिए 5000 मुर्गियों की क्षमता वाला एक नया शेड और तैयार किया है।

पशुधन से आय

- उनके यहां तीन भैंस व एक गाय है जो प्रतिदिन 8 से 10 लीटर दूध देती है। यह अपने पशुओं को उत्पादन बढ़ाने के लिए बांट के साथ अजोला भी खिलाते हैं। अजोला खिलाने से आय में खर्चा कम हो जाता है।

फार्म पौण्ड

- इन्होंने 2 वर्ष पूर्व ही अपने खेत में फार्म पौण्ड का निर्माण करवाया था जिसमें सब्जी और फसल उत्पादन करते हैं।

कृषि से प्राप्त शुद्ध वार्षिक आय का विवरण :–

इकाई	आय (प्रतिमाह)	प्रतिवर्ष आय (रू.)
पशुपालन	10000 रू.	120000
फसल उत्पादन	2 लाख	4 लाख
मुर्गीपालन	20000 रू.	2.40 लाख
कुल आय	2.30 लाख	7.60 लाख

संरक्षित खेती के साथ–साथ पशुपालन एवं पारम्परिक खेती कर कमाएं लाभ

किसान का नाम :- मनोज कुमार यादव
पिता का नाम :- शंकरलाल यादव
पता :- कालख, जोबनेर
मोबाइल नं. :- 9828279088
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- तनु नाथावत

यह कहानी जयपुर जिले के कालख, जोबनेर निवासी कृषक श्री शंकर लाल यादव एवं उनके पुत्र श्री मनोज कुमार यादव की है। इन्होंने कृषि की आधुनिक उन्नत तकनीकी का उपयोग कर मुनाफा कमाया है तथा सरकारी सब्सिडी से लाभ लेते हुए खेत में पॉली हाउस लगाए।

सर्वप्रथम 2021–22 में इन्होंने 1,115 वर्गमीटर में एक पॉलीहाऊस लगाया जिसकी कीमत 12 लाख लगी। इस पर सरकार द्वारा दी गई 75 प्रतिशत सब्सिडी का लाभ उठाया गया। इसके बाद संरक्षित कृषि से हुए लाभ को देखते हुए इन्होंने एक अन्य 1,115 वर्गमीटर का 1 पॉलीहाऊस लगाया एवं उसमें खीरे की खेती कर उस पर मुनाफा कमाया। इस पॉलीहाऊस से औसतन 900 से 1000 पॉलीबेग्स (15 किलोग्राम प्रति पॉलीबेग) खीरा प्रति माह उत्पादन लिया जाता है तथा उनकी सालाना कुल बचत या आय 5–6 लाख है।
संरक्षित कृषि के साथ–साथ श्री मनोज कुमार यादव ने पशु पालन एवं पारम्परिक कृषि को भी सुचारू रूप से कर रहे हैं। पशुपालन से प्राप्त खाद को यह पारम्परिक कृषि में उर्वरक के रूप में उपयोग करते हैं। कृषि कार्यों में उपयोग होने वाली बिजली सोलर पैनल द्वारा उत्पादित की जाती है। फसलों में सिंचाई हेतु फार्म पौण्ड में सरंक्षित वर्षा जल का उपयोग किया जाता है तथा यह फव्वारा सिंचाई विधि भी उपयोग में लेते है।

ईकाई	क्षेत्र (बीघा)	वर्ष
पॉलीहाऊस	1.0	2021–22
फार्म पौण्ड	1.0	2021–22

पशुपालन	आय (सालाना)
2 भैंस	50,000 रूपये

इनकी संरक्षित एवं पारंपरिक कृषि को मिलाकर प्रतिवर्ष आय 6 लाख रुपये प्राप्त होती है। इसके साथ ही यह कुछ सब्जियां जैसे खीरा, मिर्च, टमाटर वह अन्य फसल का भी उत्पादन करते हैं।

फसल उत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2023–24

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल (है.)	उत्पादन (क्विंटल)		कुल आय (रुपये)	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
			दाना	चारा			
1	बाजरा	0.5	8	15	30000	8000	22000
2	मूंगफली	0.2	8	10	80000	6000	74000
3	ग्वार	0.2	8	5	35000	5000	30000
4.	खीरा	0.2	300	–	300000	40000	260000
कुल योग					**445000**	**59000**	**386000**

समन्वित खेती के साथ जैविक रसायनों का उपयोग कर किसान बना खुशहाल

किसान का नाम :- श्री बजरंग लाल

पिता का नाम :- श्री गणेश राम

पता :- गांव-कालख, जिला- जयपुर

मोबाइल नं. :- 9950770360

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-पूजा हरितवाल

जयपुर जिले के प्रगतिशील किसान श्री बजरंग लाल के पास कुल 4 बीघा जमीन है जिसमें से वे 3 बीघा जमीन पर खेती करते है। इस क्षेत्र के कृषकों के लिए कृषि एवं पशुपालन ही जीवनयापन का एकमात्र सहारा है। कृषक श्री बजरंग लाल ने वर्ष 2018 से फसल व सब्जी उत्पादन करना शुरू किया। इनकी इस कठोर मेहनत के परिणामस्वरूप इनको समन्वित कृषि से आमदनी होने लगी। कुछ समय बाद किसान ने अपने खेत मे 2022 मे 1 बीघा जमीन पर पॉलीहाऊस बनाया और इसमें बूँद–बूँद सिंचाई व्यवस्था के बाद कार्बनिक खाद व जैविक उर्वरक के साथ साथ कीट नियंत्रण के लिए भी जैविक रसायन का भी इस्तेमाल शुरू किया। साथ ही साथ सरकार से ऋण पर सोलर पम्प, फार्म–पौण्ड भी अपने खेत में लगाए। जिससे इनको पानी व बिजली की बचत होती है। कृषक ने सरकार से जो ऋण लिया था वो अपनी मेहनत से की गई खेती व विभिन्न व्यवसायों से पूरा चुका दिया है।

कृषि से आमदनी शुरू होने लगी, जिसके पश्चात् इन्होंने पशुओं की उन्नत नस्लों में वृद्धि कर अपने घर में 4 भैंसे, 2 गाय व 2 बकरी ली। इनके लिए स्वयं के खेत का हरा चारा काम मे लेते हैं तथा इनकी देखभाल इनका परिवार स्वयं करता है। इस प्रकार श्री बजरंग लाल को कृषि एवम् पशुपालन से लगभग 4 लाख आय प्राप्त होती हैं।

फसल एवं सब्जी उत्पादन की औसत वार्षिक आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2023–24

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल (बीघा)	उत्पादन क्विंटल		कुल आय (रू.)	कुल व्यय (रू.)	शुद्ध आय (रू.)
			दाना	चारा			
1	बाजरा	2.0	10–15	20	40000	5000	35000
2.	गेहूं	2.0	15	30	60000	5000	65000
3..	खीरा	1.0	40	–	80000	30000	100000
4.	प्याज	1.0	50	–	60000	6000	54000
	कुल योग	**6.0**			**2,40,000**	**46,000**	**2,54000**

पुराना व्यवसाय छोड़ संरक्षित खेती व पशुपालन को अपनाया, आमदनी में लगे चार चांद

किसान का नाम :- रामकुंवार जाट
पिता का नाम :- श्री लादूराम जाट
पता :- खेड़ी अलूफा, जयपुर
मोबाइल नं. :- 9822751060
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- कोमल चौधरी

यह कहानी जयपुर जिले के खेड़ी अलूफा गांव के एक प्रगतिशील किसान श्री राम कुंवार जाट की हैं जिन्होंने अपना पुराना व्यवसाय छोड़ कर संरक्षित खेती को अपनाया तथा नई कृषि तकनीकों को अपनाकर अपनी आय को दुगुनी से ज्यादा कर लिया।

संरक्षित खेती

संरक्षित खेती की शुरुआत करने से पहले इनकी वार्षिक आय लगभग 4 से 4.5 लाख रुपये थी। वर्तमान में इनकी वार्षिक आय लगभग 14 से 15 लाख रूपये है। ये संरक्षित खेती के साथ पशुपालन भी करते हैं जिससे इनको दोहरा लाभ प्राप्त होता है। ये पशुओं के गोबर का उपयोग खाद के रूप में करते है तथा फसल के भूसे का उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए करते हैं। इनके पास 7.5 बीघा जमीन है इनके पास 1 फार्म पौण्ड (1250 वर्गमीटर), 2 पॉलीहाऊस (2000 व 4000 वर्ग मीटर) है। पॉलीहाऊस में सिंचाई के लिए ड्रिप इरिगेशन सिस्टम लगा रखा है पॉलीहाऊस में ये 1 वर्ष में खीरे की 2 फसल लेते है। बाकी जमीन पर ये बाजरा, मूंगफली, ग्वार, सरसों एवं गेहूं की फसल के साथ ही अपने घरेलू उपयोग हेतु सब्जियां उगाते हैं तथा पशुओं के लिए चारे वाली फसलें उगाते हैं। जिससे इनकी लागत में कमी आती हैं और आय में वृद्धि होती हैं।

इन्होंने एक छोटा बायोगैस प्लांट भी लगाया हुआ हैं तथा साथ ही एक सोलर पैनल भी लगवा रखा हैं एवं एक ट्यूबवेल को भी सोलर एनर्जी से जोड़ रखा है।

पशुपालन बना मुनाफे का साधन :–

वर्तमान में इनके पास 4 भैंस, 3 गाय व 6 बछड़ी है ये प्रतिदिन 35 से 40 लीटर दूध डेयरी में बेचते है जिससे इनको अच्छी आय प्राप्त होती हैं।

किसान की औसत आय–व्यय का विवरण,वर्ष 2022–23

क्र.सं.	विवरण	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)	पशुओं की संख्या	कुल आय (लाख रु.)
1.	सब्जी उत्पादन (पॉलीहाउस)	0.6	–	9
2.	फसल उत्पादन	1	–	4
3.	पशुपालन	–	13	3
			कुल आय	**16**

इस प्रकार संरक्षित खेती व पशुपालन से इन्हें 14 से 15 लाख रुपये की शुद्ध वार्षिक आय प्राप्त होती हैं।

संरक्षित खेती के साथ मशरुम की खेती

किसान का नाम :- अजित सिंह चौधरी
पिता का नाम :- सुवालाल चौधरी
पता :- सुरपुरा
मोबाइल नं. :- 9587481221
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-नीतू चौधरी

यह कहानी है सुरपुरा गांव के किसान श्री अजित सिंह चौधरी की जिन्होंने संरक्षित खेती को अपनाकर एक नई मिसाल कायम की है। इन्होंने अपना पहला शेड नेट हाऊस 2015 में स्थापित किया तथा उसमें साधारण खेती के मुकाबले अधिक मुनाफा हुआ। पानी की कमी होने से उन्हें मुश्किल आने लगी फिर उन्होनें एक 2 बीघा का फार्म पौण्ड बनाया जिसमें वर्षा का पानी एकत्रित होने लगा तथा पानी की कमी नहीं रही। अब धीरे–धीरे उनकी आय बढ़ने लगी तब इसी को अपनाकर इन्होनें 2 बीघा में 1 और पॉली हाउस 2019 में स्थापित किया।

इनके कुल जमीन 14 बीघा है तथा शेष जमीन में ड्रिप विधि (बूंद–बूंद सिचांई) से टमाटर, मिर्च तथा अन्य खरीफ की फसलें उगाते है।

इनको सर्वश्रेष्ठ किसान का पुरस्कार भी मिला है। अभी ये अपनी जमीन पर एक और पॉलीहाऊस और फार्म पौण्ड बना रहे हैं।

वार्षिक आय :– 13–14 लाख

वार्षिक लागत :– 3–4 लाख (बीज व उर्वरक)

यह किसान अभी खीरे तथा टमाटर की खेती से वार्षिक 13–14 लाख रुपये कमा रहें है तथा मशरूम की खेती से भी मुनाफा पाया है।

इकाई	क्षेत्र (एकड़)	वर्ष
पॉलीहाऊस	2 एकड़	2019–20
शेडनेट	1 एकड़	2015–16
फार्म पौण्ड	1.5 एकड़	2019–20

परम्परागत कृषि को संरक्षित खेती में बदलकर कमा रहे हैं दोगुना मुनाफा

किसान का नाम :- रामूजी यादव
पिता का नाम :- रामेश्वर यादव
पता :- गणेशपुरा, कालख (जोबनेर)
मोबाइल नं. :- 9828192575
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-काजल यादव

यह कहानी है राजस्थान के छोटे से गांव कालख के प्रगतिशील किसान रामू जी यादव की जो अपनी 12 बीघा जमीन में समन्वित कृषि कर दुगुना मुनाफा कमा रहे हैं। लगातार बदलते मौसम में पानी की कमी को देखते हुए रामू जी ने सन् 2020 में 2000 वर्ग मीटर के दो पॉलीहाऊस लगाए।

पॉलीहाऊस में सिंचाई आपूर्ति के लिए 31 X 19.5 X 5 मीटर के 2 फार्म पौण्ड बनवाये व 0.5 बीघा में सोलर पैनल लगवाए। रामू जी ने पॉलीहाऊस में खीरे की गिलहरी व कैप्टन स्टार किस्म लगाई जो बहुत अच्छा उत्पादन दे रही है। पॉलीहाऊस में ड्रिप सिंचाई का उपयोग कर रामू जी जल संरक्षण व रोगों से पौधे का बचाव भी कर रहे है। इस प्रकार वर्ष में दो बार खीरे की फसल लगा रहे हैं।

पशुपालन : फसल उत्पादन के साथ–साथ रामू जी पशुपालन से भी बेहतर आय अर्जित कर रहे हैं। पशुओं में रामू जी के पास 6 गिर गायें व 3 मुर्रा भैंस हैं जो प्रतिदिन 80 लीटर दूध उत्पादन करती है जिससे रामू जी को रु. 4000 प्रतिदिन की आय प्राप्त हो रही है ।

इसके अलावा शेष भूमि पर मूंगफली, बाजरा, ग्वार व अन्य सब्जियों का उत्पादन कर रहे हैं जिससे उन्हें 2.5 लाख से 3 लाख की रुपयों की प्रति वर्ष आय प्राप्त हो रही है।

पशुपालन से आय–व्यय का विवरण

कुल पशु	कुल आय (लाख रू.)	कुल लागत (लाख रू.)	शुद्ध लाभ (लाख रू.)
6 गिर गाय	430000	150000	2,80,000
3 मुर्रा भैंस	360000	90000	2,70,000
कुल आय	**7,90,000**	**2,40,000**	**5,50,000**

वार्षिक आय व्यय का विवरण –

क्र.सं.	विवरण	क्षेत्र/इकाई	कुल आय (लाख रू.)	कुल लागत (लाख रू.)	शुद्ध लाभ (लाख रू.)
1	फसल उत्पादन	12 बीघा	4	1	3
2	पॉलीहाउस	4000 मीटर^2	10	3	7
3	पशुपालन दुग्ध	9 पशु	790000	240000	550000
		कुल आय	**12,90,000**	**4,00,000**	**15,50,000**

इस प्रकार रामू जी समन्वित कृषि और संरक्षित खेती से प्रतिवर्ष 15 से 16 लाख रुपये की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं।

टमाटर एवं गेंदे के बीज उत्पादन के साथ पशुपालन से मुनाफा

किसान का नाम :- मंगलचन्द्र ताकर
पिता का नाम :- नानूराम ताकर
पता :- गांव-कालख (जोबनेर)
मोबाइल नं. :- 9783863715
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-दुर्गेश कंवर

यह कहानी है जयपुर जिले के कालख गांव के किसान श्री मंगलचंद ताकर की जिनके पास 22 बीघा जमीन है जिस पर उन्होंने डेयरी फार्म, फार्म पौण्ड बना रखा है जिसमें वर्षा जल को एकत्रित कर बीज उत्पादन कर रहे है। फार्म पौण्ड का निर्माण प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अन्तर्गत वर्ष 2020–21 में हुआ। फार्म पौण्ड का आकार 70 X 70 X 18 मीटर है। स्वीकृत राशि 9.80 लाख रूपये है।

क्र.स.	फसल	क्षेत्र (बीघा)	उत्पादन (क्विं.)	कुल आय (रु.)	कुल व्यय (रु.)	शुद्ध आय (रु.)
1	सरसों	5	15	50000	25000	35000
2	गेहूँ	5	20	50000	4500	30000
3	जौ	5	20	30000	4000	20000
कुल आय		15	55	130000	33500	85000

श्री मंगल चन्द ताकर ने टमाटर व गेंदें के बीजों का उत्पादन करते हैं। वे इन बीजों को 900 रू. प्रति 10 ग्राम बीज के हिसाब से बाजार में बेचते हैं तथा इसके अलावा देश के अन्य राज्यों व विदेशों में भी निर्यात करते हैं।

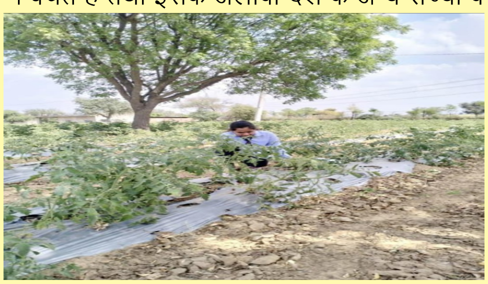

बीज उत्पादन से मिलने वाली कुल वार्षिक आय का विवरण

क्र.सं.	विषय	फसल	क्षेत्र बीघा	उत्पादन (किलोग्राम)	कुल आय (रुपये)	कुल व्यय(रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
1	बीज उत्पादन	टमाटर	2.5	10	90000	30000	60000
		गेंदा	2.5	20	180000	60000	120000
कुल			**5.0**	**30**	**2,70,000**	**90,000**	**1,80,000**

पशुपालन :–डेयरी फार्म पर श्री मंगल चंद के 10 पशु हैं जिनमें से 3 गाय और 2 भैंस 5 छोटे बछडें है गायों में हॉलिस्टीन व जर्सी नस्ल है तथा भैंस मुर्रा नस्ल की है। किसान को 1 महिने में 28200 रूपये की आय मिलती है। पशुओं को स्वयं के खेत का भूसा व दाना खिलाते है। डेयरी में 20 लीटर दूध देते हैं।

क्र.सं.	विवरण नस्ल	पशुधन संख्या	कुल आय प्रतिवर्ष दूध उत्पादन	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
1	**मुर्रा भैंस**	2	200000	80000	120000
2	**हॉलिस्टीन गाय**	2	250000	80000	170000
	कुल	**4**	**450000**	**160000**	**290000**

श्री मंगल चन्द ताकर ने परम्परागत खेती, बीज उत्पादन के साथ पशुपालन अपनाकर लगभग 6 लाख रूपये वार्षिक आय अर्जित करते हैं। धीरे–धीरे इसके साथ व अन्य कृषि ईकाईयां जैसे केंचुआ खाद आदि स्थापित करके अपनी आय बढ़ाने की ओर अग्रसर हैं।

पॉलीहाऊस में खीरा लाभकारी उत्पादन

किसान का नाम :- चन्दा लाल यादव
पिता का नाम :- झूंथाराम यादव
पता :- गढ़वालों की ढाणी, बस्सी झाझड़ा
मोबाइल नं. :- 9828231267
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-अमीषा चौधरी

किसान चन्दा लाल यादव ने पॉलीहाऊस लगाकर खेती को लाभदायक व्यवसाय बनाया।

सरकारी अनुदान से लगाया पहला पॉलीहाऊस :–

4000 वर्ग मीटर में एक पॉलीहाऊस लगाने में 34 लाख का खर्चा आया जिसमें से 9 लाख स्वयं किसान ने वहन किये जो कि बैंक से ऋण के रूप में लिया तथा बाकी अनुदान मिल गया था। खीरा की बुवाई पर 1.5 लाख रूपये खर्च हुए एवं 4 महीने में ही 12 लाख रुपये का खीरा बेचा। यह खेती का पहला अनुभव था। इस मुनाफे से प्रोत्साहित होकर इन्होनें 3 पॉलीहाऊस और लगाये और जल्दी ही बैंक का कर्ज अदा कर दिया। चन्दा लाल जी ने 2000 वर्गमीटर से शुरुआत की थी आज 14000 वर्गमीटर में पॉलीहाऊस लगाकर मुनाफा कमा रहे है।

पॉली हाउस की संरचना

निर्माण वर्ष	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	योजना का नाम	अनुदान राशि (लाख रूपये)	कुल राशि (लाख रूपये)	कृषक द्वारा लगाई गई राशि (लाख रूपये)	बचत (लाख रू.)
2018–19	2000	ग्रीन हाउस	9,95,000	1995000	1000000	4,00,000
2020–21	4000		9,95,000	1700000	1700000	6,00,000
2021–22	4000		9,95,000	1800000	1800000	6,00,000
2022–23	4000		19,00,000	2900000	1000000	3,00,000

खेत के जल को खेत में ही खेत तलाई बनाकर संरक्षित किया।

खेत तलाई की संख्या	निर्माण वर्ष	योजना का नाम	अनुदान राशि	कृषक द्वारा लगाई गई राशि
1	2019	खेत तलाई	90000	150000
1	2023	खेत तलाई	340000	350000

हाईटेक खेती और पशुपालन खेती से किसान बना समृद्ध

किसान का नाम :- रमेश यादव
पिता का नाम :- बाबूलाल यादव
पता :- बस्सी झाझड़ा, जयपुर
मोबाइल नं. :- 9664359010
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-ज्योति कामड

यह प्रगतिशील किसान रमेश यादव की सफलता की कहानी है जिन्होंने हाईटेक खेती को अपनाकर समृद्धि की ओर अपना कदम बढ़ाया है।

मिनी इजराइल के नाम से विख्यात जोबनेर के पास बस्सी झाझड़ा गाँव के किसान श्री रमेश जी यादव के पास कुल 17 बीघा जमीन है जिसमें से कुल 5 बीघा पर 3 पॉलीहाऊस हैं। सबसे बडा पॉलीहाऊस 4000 वर्ग मीटर में है साथ ही फार्म पर 2 खेत तलाई है, 2 सोलर पेनल सेट भी हैं। खेत तलाई मे बारिश का पानी इकट्ठा कर तीनों पॉलीहाऊस में बून्द–बून्द विधि से सौर ऊर्जा की सहायता से सिंचाई करते हैं जिससे बिजली व जल दोनों की बचत होती है। उन्होंने बताया की संरक्षित खेती करके सालाना आय मे दो गुना मुनाफा हुआ है, उनकी 5 बीघा जमीन पर मूंगफली व 4 बीघा में बाजरा उत्पादन कर रहे हैं। इसके अलावा बीज व खाद–उर्वरक की दुकान भी है जिससे उन्हें 7–8 लाख रूपये की वार्षिक आय मिलती है।

निर्माण वर्ष	क्षेत्रफल (वर्ग मीटर)	योजना का नाम	अनुदान राशि	कुल राशि	कृषक द्वारा लगाई गई राशि	बचत (लाख)
2018–19	2000	ग्रीन हाउस	995920	1991840	995926	2
2020–21	4000		1246000	2194800	948800	3
2022–23	4000		1246000	2194800	948800	4

पशुपालन उत्पादन :

पशुओं की संख्या	नस्ल	दुग्ध उत्पादन प्रतिदिन (लीटर)	मूल्य (रू.)	शुद्ध आय (वार्षिक)
2	मुर्रा भैंस	13–14	70	60 हजार
2	गीर गाय	8–10	50	30 हजार

इनके पास 2 भैंस व 2 गाय है जिनसे 35–40 लीटर प्रतिदिन दूध उत्पादन होता है जिससे वार्षिक आय रू 10–13 लाख हो जाती है

समन्वित खेती : आय दोगुना करने का आसान तरीका

किसान का नाम :- श्री सुंडा राम निठारवाल
पिता का नाम :- श्री रामनारायण निठारवाल
पता :- बस्सी झाझड़ा, जयपुर
मोबाइल नं. :- 9828157299
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- मन्जू चौधरी

यह कहानी बस्सी झाझडा गांव के एक प्रगतिशील किसान श्री सुंडाराम की है। इनके पास 10 बीघा जमीन है जिस पर उन्होंने 3 पॉलीहाऊस, 1 शेडनेट हाऊस, 2 फॉर्म पौण्ड एवं 2 सोलर पैनल लगाकर अपनी खेती करने के तरीके को बदलकर अपनी आय को दो गुना किया है। इनका कहना है कि वे दोनों फार्म पौंड में बरसात के पानी को संरक्षित करते हैं और इस पानी से 6 महीने तक बूंद–बूंद सिंचाई करते हैं। बूंद–बूंद सिंचाई से पैसा, श्रम व समय तीनों की बचत होती है साथ ही साथ जल संरक्षण में भी सहयोग मिलता है और इसमें मल्च पद्धति के उपयोग से फसल को मौसम की मार और खरपतवारों से भी बचाते है जिससे फसल को सिंचाई देने की कम आवश्यकता पड़ती है। यह अपने खेत पर तरबूज, खीरा, ककड़ी, गोभी एवं टिंडे की खेती करके अच्छा मुनाफा कमा रहे हैं। साथ ही अपने खेत में मीठी मक्का की भी खेती करते हैं जिससे अतिरिक्त आमदनी के साथ पशुओं को पोषक तत्वों से भरपूर चारा भी मिल जाता है। इसे पशु बड़ी ही रोचकता के साथ खाते हैं और पशुपालन से मिलने वाले गोबर की खाद का उपयोग खेत में करने से जैविक खेती को बढ़ावा मिलता है तथा रसायनों का उपयोग कम होता है। जैविक खेती से प्राप्त उत्पाद स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होते हैं जिससे पशुओं में बीमारियों से बचाव होता है एवं हमारे देश की रीड की हड्डी किसान स्वस्थ एवं कुशल जीवन यापन करता है। मिनी इजराइल के नाम से प्रसिद्ध यह गांव फसल उत्पादन बढ़ाने के साथ–साथ स्वास्थ्य को भी महत्व देता है। खेती के साथ–साथ पशुपालन भी करते हैं।

यह सरस डेयरी के संचालक भी है जिससे वह अपने गांव के विभिन्न घरों से दूध इकट्ठा करते हैं। इससे किसानों को भी अपने दूध उत्पाद को बेचने में आसानी हो जाती है एवं आमदनी बढ़ाने में सहायता मिलती है और उनके कार्य को देखकर दूसरे किसान भी पशुपालन करने के लिए प्रेरित होते हैं जिससे गांव के अन्य किसानों की आर्थिक स्थिति में भी सुधार हो रहा है।

समन्वित खेती से मिलने वाली कुल आय व्यय का विवरण

क्र.सं	आय के स्रोत	क्षेत्र संख्या (है.)	कुल आय (रूपये)	कुल खर्चा (रूपये)	शुद्ध आय (रूपये)
1.	पॉलीहाऊस	4000 वर्ग मी.	10 लाख	2 लाख	8 लाख
2.	पॉलीहाऊस	4000 वर्ग मी	10 लाख	2 लाख	8 लाख
3.	खरीफ एवं रबी	3–5 बीघा	5 लाख	1 लाख	4 लाख
4.	पशुपालन	23 पशु	2 लाख	1.5 लाख प्रतिमाह	50 हजार प्रतिमाह
5.	सरस डेयरी	1000 लीटर प्रतिदिन	60000 प्रति महीना	25 हजार प्रतिमाह	35 हजार प्रतिमाह

समन्वित खेती से जीवन खुशहाल

किसान का नाम :- सुरज्ञान दादरवाल
पिता का नाम :- बालूरामजी दादरवाल
पता :- बस्सी झाझड़ा
मोबाइल नं. :- 9983675451
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-मनीषा कुमावत

श्री सुरज्ञान जी ने जब दिनेश जी निठारवाल (सरपंच) के यहां पर संरक्षित खेती को देखा और पाया कि कम पानी और कम जगह में संरक्षित खेती (पॉलीहाऊस) में खेती से ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है तब इन्होंने भी पॉलीहाऊस लगाने का सोचा। पैसे की समस्या थी पर फिर उन्हें सरकार की तरफ से मिल रही सब्सिडी के बारे में पता चला। सब्सिडी के तहत मिले 23,80,000 तथा 10,00,000 के स्वयं के खर्च से उन्होंने 4000 वर्ग मीटर में पॉलीहाउस का निर्माण करवाया और उसमें खीरा उगाना शुरू किया जिसकी साल में 2 फसल ले रहे हैं।

इनके पास 1 फॉर्म पौण्ड हैं और सोलर पावर सिस्टम भी है जिसका उपयोग वे बिजली उत्पादन व सिंचाई के लिए करते हैं। पॉली हाउस में सिंचाई के लिए इन्होंने बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली लगा रखी है। जिस पर उन्हें 70 प्रतिशत सब्सिडी मिली है। सुरज्ञान जी को एक पॉलीहाऊस से 1 साल में 18 लाख रुपए का मुनाफा हो जाता है। सुरज्ञान जी की वार्षिक आय 20 से 22 लाख रुपये है। कृषक पॉलीहाऊस में घर पर बने गोबर की खाद व वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग करते हैं। इसी प्रकार सुरज्ञान जी आज संरक्षित खेती अपनाकर बहुत खुश है और अपने परिवार को एक खुशहाल जीवन व बच्चों को उच्च शिक्षा देने में सफल हो पाए हैं।

पॉलीहाऊस उससे प्राप्त आय (खीरा फसल) प्रतिवर्ष			
क्र.सं.	क्षेत्रफल	कुल उत्पादन	कुल आय(प्रति वर्ष)
1.	4000 वर्गमीटर	25 टन	20 से 22 लाख

फॉम पौण्ड

क्र.सं.	आकार	अनुदान	कुल लागत	क्षमता
1.	50X50X3	50 प्रतिशत	9.50 लाख	75,00,000

खेती के साथ पशुपालन :–

किसान अपने 1.5 हैक्टेयर फॉर्म पर दोनों मौसम में फसल लेते हैं, जिसमें उन्हें अपने परिवार के पोषण के साथ–साथ पशुओं के लिये चारा भी मिलता है। साथ ही घरेलु उपयोग के अलावा अपनी फसल को बाजार में बेचकर आर्थिक मुनाफा कमाते है। किसान के पास 10 पशु है जिसमें गिर नस्ल की 5 गाय और 5 मुर्रा भैंस दोनों पशु है। पशुओं से प्राप्त दूध एवं घी आदि को बेचकर किसान को काफी लाभ मिलता है ।

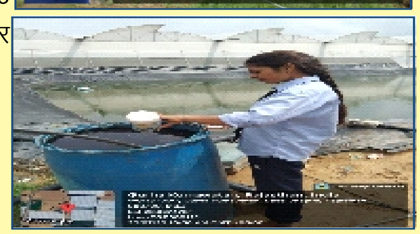

किसान की औसत आय–व्यय का विवरण, वर्ष 2022–23

क्र.सं.	विवरण	कुल व्यय (रू.)	कुल आय (रू.)	शुद्ध आय (लाभ) रू.
खरीफ व रबी				
क्र.सं.	क्षेत्रफल	कुल आय (रूपयों में)	कुल आय	शुद्ध आय
1.	1.5 हैक्टेयर	1,80,000	93,000	87,000

पशुपालन से आय

क्र.सं.	नस्ल	दुग्ध उत्पादन (प्रति लीटर)	मूल्य (रू.) प्रति लीटर	शुद्ध आय (वार्षिक) रू.
1.	2 मुर्रा भैंस	10 लीटर	70	35,000
2.	3 गिर गाय	15 लीटर	50	30,000

समन्वित प्रणाली से उत्पादन कर मुनाफा कमाया

किसान का नाम :- जगदीश यादव
पिता का नाम :- गुल्लाराम यादव
पता :- ग्राम-कालख, जयपुर
मोबाइल नं. :- 9680158700
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :- उर्मिला चौधरी, महिमा जाखड़

यह कहानी पंचायत समिति स्तर पर पुरस्कृत जयपुर जिले के प्रगतिशील किसान श्री जगदीश यादव की है। इनके पास 17 बीघा जमीन है। जिसमें 8000 वर्गमीटर व 4000 वर्गमीटर के दो पॉलीहाऊस लगे हुए है। यह मुख्य रूप से पॉलीहाऊस में सब्जियों की खेती करते हैं जैसे–टमाटर (हिमशिखर किस्म), खीरा (स्टारकिंग किस्म), मिर्ची, तरबूज और खरबूजा।

पॉलीहाऊस के साथ ही इन्होंने वर्षा जल को संरक्षित करने के लिए 2 फॉर्म पौण्ड भी बना रखे है। फॉर्म पौण्ड पर राजस्थान सरकार से 90000 हजार रूपये का अनुदान मिला है। सब्जियों मे मुख्य रूप से खीरा व टमाटर लगाते रहे हैं। 20 से 25 लाख रूपये की सालाना आमदनी होती है। आमदनी बढाने के लिए वर्ष 2014 में सोलर प्लांट लगाया तथा वर्ष 2023 में 4000 वर्गमीटर में पॉलीहाऊस का निर्माण कर खीरा व टमाटर की खेती करते हैं। वर्तमान में उनके पास 3 पॉलीहाऊस और 2 फॉर्म पौण्ड हैं।

यह सब्जियों की खेती वर्ष 2013 से कर रहे हैं मुख्य रूप से उनके पास निम्न स्त्रोत है–

आय के स्त्रोत	क्षेत्र (वर्गमीटर)	कुल आय (रूपये)	कुल खर्चा	शुद्ध आय
1. पॉलीहाऊस	8000 (वर्ष 2015)	10–12 लाख	2–2.5 लाख	10 लाख
2. पॉलीहाऊस	8–10 लाख	8–10 लाख	1.5 लाख	8 लाख
3. खरीफ व रबी	7–8 बीघा	6–7 लाख	1 लाख	6 लाख

पशुधन से आय :–

- इनके पास मुर्रा नस्ल की 5 भैंस और गिर नस्ल की 3 गाय हैं इनसे 45–50 लीटर दूध प्रतिदिन प्राप्त होता है जिसको 60 से 70 रूपये प्रति लीटर की दर से डेयरी में बेचते हैं।
- इसके साथ ही पशुधन के गोबर से तैयार वर्मीकम्पोस्ट और हरी खाद भी तैयार कर पॉली हाउस में उपयोग करते है। साथ ही मृदा में जैविक कार्बन को बढ़ाने के लिए हरी खाद (ग्वार) का उपयोग करते है।

अच्छी आमदनी के लिए खीरे की खेती हुई लाभकारी

किसान का नाम :- शिशुपाल सिंह

पिता का नाम :- गोपीराम जी

पता :- ग्राम-महरौली, तहसील-श्रीमाधोपुर (सीकर)

मोबाईन नं. : 9414605749

आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-आदेश, विकास, महेन्द्र, मनोज, नरेन्द्र

यह कहानी प्रगतिशील किसान श्री शिशुपाल सिंह की हैं । इनका संबंध शुरुआत से ही कृषि से हैं। इनके पास 24 बीघा जमीन हैं जिसमें इन्होंने 4000 वर्ग मीटर में 1 पॉलीहाऊस का निर्माण किया है जिससे प्रतिवर्ष वे खीरे की दो फसल लेते हैं। उन्होंने बताया कि खरीफ ऋतु में सुपर ग्लोरी किस्म लगाते हैं तथा रबी ऋतु में एमीस्टार आर जेड अफ 1 किस्म लगाते हैं तथा 45 दिन का सोलेराइजेशन करते हैं। उन्होंने बताया कि जुताई के बाद खाद उर्वरक व बीज का कुल व्यय 4 लाख रुपये प्रतिवर्ष लगता हैं तथा प्रतिवर्ष 16 –18 लाख रुपये तक की शुद्ध आय प्राप्त करते हैं ।

सरकारी योजनाओं का उठाया लाभ :–

शिशुपाल सिंह ने वर्ष 2018 में 4000 वर्ग मीटर का पॉलीहाऊस 33,76,000 की लागत से लगाया जिसमें राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 75 प्रतिशत सब्सिडी (23,65,200) मिली तथा (40 × 20 मीटर लंबाई तथा 15 फीट गहराई) का 1 फॉर्म पौण्ड बनाया जिस पर 60 प्रतिशत सब्सिडी मिली। उन्होंने पिछले वर्ष एक ट्यूबवेल भी लगवाया तथा सरकारी अनुदान राशि की सहायता से सोलर पैनल भी लगाया जिसमें 70 प्रतिशत सब्सिडी मिली ।

किसान शिशुपाल की सफलता के किस्से सीकर जिले में आम हैं । संरक्षित खेती से जुड़कर खेती की तस्वीर के साथ अपनी तकदीर बदली हैं। खीरा उत्पादन से सालाना 14 से 18 लाख रुपए की आमदनी मिल रही हैं। पानी की कमी होने के कारण शिशुपाल सिंह ने बरसात के पानी को सहेज कर आमदनी बढ़ाने में जुटे हुऐ हैं। उन्होंने बताया कि परिवार के पास 24 बीघा जमीन है। शिशुपाल सिंह पांचवी पास करने के साथ ही खेती से जुड़ गया, तब से अब तक खेती का काफी अनुभव लिया लेकिन आमदनी का मीठा स्वाद संरक्षित खेती अपनाकर ही चखने को मिला। इस प्रकार शिशुपाल सिंह ने खीरे की खेती से आमदनी प्राप्त कर रहे हैं ।

नेशनल राजस्थान विकास दर्पण जयपुर

खीरे की खेती से लखपति बना किसान एक साल में दो बार उत्पादनः सालाना कमा रहा 15 से 20 लाख

जुताई खाद उर्वरक व बीज का कुल व्यय चार लाख खर्च के बाद प्रतिवर्ष 16 से 18 लाख की हो रही है आय

किसान शिशुपाल की सफलता के किस्से पूरे सीकर ज़िले में चर्चित

उन्नत तकनीकी अपनाकर लाभप्रद खेती

किसान का नाम :- **तेजाराम गोलाड़ा**
पिता का नाम :- **मोहरूराम गोलाड़ा**
पता :- **चम्पापुरा, कालवाड़, जयपुर**
मोबाइल नं. :- **9783500731**
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-प्रियंका कुमावत, पूजा कुमावत

जयपुर जिले के चंपापुरा गांव के प्रगतिशील किसान तेजाराम गोलाड़ा वर्तमान में नई कृषि उत्पादन तकनीकों की सहायता से अधिक मुनाफा कमा रहे हैं। इनके पास 30 बीघा जमीन है जिस पर यह मूंगफली (8 बीघा), ग्वार (6 बीघा), ज्वार (2 बीघा) एवं बाजरा (5 बीघा) उगाते है। इन फसलों में प्रयोग होने वाली दवाईयां जैसे खरपतवारनाशी, कीटनाशी का कम प्रयोग करते है तथा जैविक खेती पर अग्रसर किसान हैं। ये अपनी फसलों में अच्छी गुणवत्ता वाले उपकरणों का प्रयोग करते है तथा वर्तमान में कृषि यांत्रिकी के दौर को देखते हुए अपनी आय को अत्यधिक बढ़ाने और बदलते मौसम के चलते 3 पंखे 6 एचपी मूंगफली थ्रेसिंग का आयात इसी वर्ष किया है जिससे समय की बचत करते हुए फसल की तैयारी पहले कर सकते हैं। इन्होंने अपने खेत में 25 फीट गहरा फार्म पौण्ड बनवा रखा हैं जिससे यह फसलों में सिंचाई करते है और नमी संरक्षण के लिए मल्चिग का प्रयोग करते हैं।

बिजली की बचत करते हुए इन्होंने फसल उत्पादन के विभिन्न कार्यो को पूरा करने के लिए अपने घर की छत पर 40 वाट सौलर पैनल स्थापित कर रखा हैं जिसका लाभ यह अपनी फसलों के लिए सिंचाई के साधन ड्रीप सिस्टम में प्रयोग करते हैं। विभिन्न मशीनरी जैसे विद्युत चालित फोडर कटिंग मशीन और पावर स्प्रेयर मे प्रयोग कर लाभ उठाते हैं।

पशुपालन :–

इनके पास 10 भैंसे, जो मुर्रा नस्ल की है 1 भैंस प्रतिदिन 8–10 लीटर दूध देती हैं जो इनकी आय मे मुनाफा करती है।

जायद ऋतु :–

जायद की फसलों में तेजाराम जी तरबूज उगाते हैं जिससे इन्होंने इसी वर्ष तरबूज की खेती से 5 लाख का मुनाफा कमाया। कुल आय कृषक वर्ष भर में खेती से 10–12 लाख का शुद्ध मुनाफा कमाते है।

जल संरक्षण एवं सौर ऊर्जा से कृषि एवं किसान की काया पलट

किसान का नाम :- कान्हाराम यादव
पिता का नाम :- श्री नायामण यादव
पता :- अरनिया गांव, श्रीमाधोपुर, जिला-सीकर
मोबाइल नं. :- 8005907893
आवंटित रेडी छात्रा का नाम :-अमन शेरावत

यह अरनिया गांव, श्रीमाधोपुर के प्रगतिशील किसान कान्हाराम यादव की सफलता की कहानी है जो अपनी प्रगतिशीलता से देशभर के किसानों के लिए प्रेरणा बन रहे हैं। पॉलीहाऊस का निर्माण, प्याज का भंडारण, ड्रिप विधि से सिंचाई, वर्मीकम्पोस्ट, वर्षा जल संचयन प्रणाली, खेती में सौर ऊर्जा संयंत्र का उपयोग, शीतगृह वर्तमान परिप्रेक्ष्य के अनुसार इन्होंने तकनीकों का प्रयोग कर उत्कृष्ट उत्पादन कर अपनी आय में वृद्धि की है। साथ ही इन्होंने पशुपालन के लिए हिसार से प्रशिक्षण भी प्राप्त किया।

पॉलीहाऊस : किसान कान्हाराम जी ने कृषि विज्ञान केन्द्र से प्रशिक्षण लेने के बाद 50 प्रतिशत सरकारी सब्सिडी पर पॉलीहाऊस बनवाया और खीरे की खेती करना प्रारम्भ किया। वे प्रतिवर्ष 0.4 हैक्टेयर भूमि पर औसत 51 टन खीरा उत्पादन कर रहे हैं।

पॉली हाउस उत्पादन से आय–व्यय का विवरण

विवरण	औसत उत्पादन प्रतिवर्ष	औसत बाजार भाव	कुल आय (रु.)	कुल व्यय प्रतिवर्ष (रु.)	शुद्ध आय (रु.)
खीरा	51 टन	20 / किलोग्राम	10,00,000	4,00,000	6,00,000

फार्म पौण्ड : जब खेत में जल स्तर कम होन लगा तो कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह से उन्होंने 14.5 लाख लीटर की क्षमता वाला फार्म पौण्ड का निर्माण करवाया तथा पूरे साल इसी संचित जल के द्वारा खेत की सिंचाई करते हैं।

वर्मी कम्पोस्ट इकाई : सरकारी सब्सिडी की सहायता से केंचुआ खाद तैयार करना शुरू किया जिससे मृदा की उर्वरा शक्ति में वृद्धि हुई एवं इन्हें अधिक लाभ प्राप्त हुआ तथा रासायनिक उर्वरकों पर निर्भरता में कमी आई।

बिजली की समस्या : वे बताते है कि गांव में बिजली की समस्या रहती थी। इसके समाधान के लिए सौर ऊर्जा पैनल लगवाया।

इसके साथ ही किसान कान्हा राम यादव ने शीतगृह भी बनाया जिससे खीरे को शीत गृह में भण्डारित करके अच्छा मुनाफा प्राप्त करते है। कान्हाराम जी का कहना है कि अगर किसान को कृषि के नये तरीके पता है और किसान मेहनत करे तो उसकी आय दोगुनी नहीं बल्कि 4 गुना बढ़ सकती है।

बूंद–बूंद सिंचाई विधि : बूंद–बूंद सिंचाई पद्धति पानी की बचत के लिए काफी उपयागी साबित हुई। इससे लगभग 60 से 90 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है। इसके कारण सब्जी और अन्य फसलों के उत्पादन में 20 से 50 प्रतिशत तक बढ़ोतरी हुई हैं। इस माध्यम में फर्टिगेशन करने से पोषक तत्व बराबर और उपयुक्त मात्रा में पौधों की जड़ों में पहुँचाए जाते हैं। जिसके फलस्वरूप फसलों की पैदावार में वृद्धि होती है।

पशुपालन : किसान के पास कुल 8 पशु हैं जिनमें 3 गिर गाय, 2 भैंस तथा 3 छोटे बछड़े–बछड़ियां हैं। गायें गिर नस्ल की है तथा भैंस मुर्रा नस्ल की है। ये पशुओं को अच्छा चारा तथा पौष्टिक आहार खिलाते हैं। दुधारू पशुओं से डेयरी में रोजाना लगभग 40 लीटर दूध बेचते हैं। इनसे किसान को सालाना 3.50 लाख रुपये तक की आय होती है।

पशुपालन की आय विवरण :

विवरण	संख्या	औसत उत्पादन प्रति पशु प्रतिवर्ष	कुल उत्पादन प्रतिवर्ष	औसत बाजार भाव (रू.)	कुल आय (रू.)	कुल व्यय प्रतिवर्ष (रू.)	शुद्ध आय (रू.)
गाय	3	4000 लीटर	12,000 लीटर	30 / लीटर	3,60,000	1,08,000	2,50,000
भैंस	2	2000 लीटर	4,000 लीटर	50 / लीटर	2,00,000	80,000	1,20,000

खेती से आमदनी :

क्र.सं.	फसल	क्षेत्रफल (हैक्टेयर)	दाना उत्पादन (क्विंटल)	चारा उत्पादन (क्विंटल)	कुल आय (रुपये)	कुल व्यय (रुपये)	शुद्ध आय (रुपये)
1	बाजरा	0.7	16	30	27,000	12,000	15,000
2	ग्वार	0.4	7	7	40,000	6,000	34,000
3	जौ	0.4	16	18	30,000	10,000	20,000
4	गेहूं	0.5	2	35	75,000	18,000	57,000
कुल					**1,72,000**	**46,000**	**1,26,000**

खेती में नवाचार की ओर अग्रसर किसान की सफलता के कारण आसपास के अन्य किसान, वैज्ञानिक और कृषि अधिकारी इनके खेत पर इनके नवाचार देखने आने लगे।

विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस